देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय को प्रतिनिधि चाहिए
पत्रकारिता के साथ सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक-अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें- 91 8839797448/942443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५४/१६ अंक- ३५ | भोपाल, ९ अगस्त, डाक १० अगस्त २०२६ | भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित | पृष्ठ -८ | मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

नाहक मत जोड़ भीड़ से अपना मन। एकांत का फिर करना पड़ेगा जतन।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-१५८

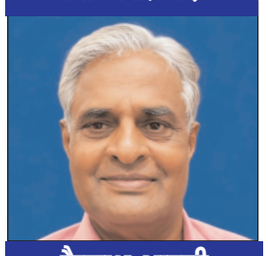

कैलाश आदमी

मेरे परम हितैषी मित्र मोहन प्रकाश व्यास की यादें अभी कुछ दिनों और मेरे मन-मस्तिष्क पर छाई रहेंगी। कारण यह कि वे लंबे अंतराल के बाद मुझे और फिर ऐसे एकाकार हुए कि हम आए दिन परस्पर मिलने-जुलने लगे। जब मैंने उन्हें बताया कि हमने निर्दलीय के स्थापना दिवस पर मित्र मिलन और साहित्यकारों के सम्मान का जो सिलसिला शुरू किया था अब उसने वृहदाकार रूप ले लिया है। फिर क्या था श्री व्यास ने निर्दलीय प्रकाशन के वार्षिकोत्सव २०२६ के अवसर पर सम्मानार्थियों को दिए जाने वाले मानपत्रों का जिम्मा खुद ही ले लिया और फिर अपनी जिम्मेदारी का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। यही नहीं वे गांधी भवन स्थित जिला सर्वोदय मंडल एवं न्यास की गतिविधियों से भी जुड़ गए। मैं भी श्री व्यास द्वारा स्थापित व्यास म्यूजिकल ग्रुप के आयोजनों में विशेष अतिथि के तौर पर जाने-आने लगा।

दरअसल साढे तीन दशक पूर्व जब श्री व्यास दैनिक नवजीवन के भोपाल संस्करण से जुड़े तो उन्होंने मुझे भी अंशकालिक रूप से इसे जोड़ लिया। हम उन दिनों प्राय: रोज ही नवजीवन को प्रेस परिसर में आवंटित स्थल पर मिलने लगे थे। मैं उन दिनों निर्दलीय के साथ ही दैनिक भास्कर के संपादकीय विभाग में कार्यरत था। नवजीवन का भोपाल संस्करण टिकाऊ साबित नहीं हुआ। अतएव हमारी राहें फिर जुदा हो गईं।

श्री व्यास सर्व ब्राह्मण संगठन के भी संरक्षक थे तथा वे प्रतिवर्ष होली मिलन एवं दीवाली मिलन के अवसर पर मुझे बुलाने लगे। इसके साथ ही जैसा कि मैंने पूर्व में कहा व्यास म्यूजिकल ग्रुप के कार्यक्रमों में जाने-आने लगा था।

श्री व्यास के चिंतन का फलक अत्यंत विस्तृत था। वे बड़े खुश मिजाज और हाजिर जवाबी थे ही किंतु यश और मान का प्रलोभन उनमें बिलकुल नहीं था। उनकी वाणी साफ-सुथरी थी और यह कहना उपयुक्त होगा कि वाणी में बाण नहीं वीणा का मधुर स्वर सुनाई देता था। यद्यपि उन्हें कुछ रोगों ने घेरा रखा था फिर भी वे चिंतामुक्त दिखाई देते थे। श्री व्यास का निधन निर्दलीय प्रकाशन के लिए अपूरणीय क्षति कहा जा सकता है। वे जिजीविषा के धनी थे किंतु कालचक्र ने उन्हें ऐसा घेरा कि उन्हें जीवन से ही हाथ धोना पड़ा। उनका सेवापरक जीवन उनके व्यक्तित्व को बहु आयामी ऊंचाइयां देता है। दैनिक नवजीवन के संपादन का प्रभार संभालने के पूर्व वे दैनिक कृति क्रांति और दैनिक आज समाज का भी प्रतिनिधित्व करते थे। इसके पूर्व उन्होंने जनगणना विभाग और भारत सरकार के विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार संचालनालय में सेवारत रहे।

श्री व्यास सुकून और सब्र अर्थात धैर्य की शक्ति से संपन्न थे। वे मन वचन व कर्म से ब्राह्मण किंतु संप्रदाय व जातीय संकीर्ण भावनाओं से सर्वथा परे रहते थे तथा सर्वधर्म समभाव में पूर्ण विश्वास रखते थे। सुखमय जीवन जीने की ललक हर व्यक्ति में विद्यमान रहती है और ऐसी ही ललक मैं उनमें पाता था। समय का महत्व वे भली-भांति समझते थे और निर्दलीय प्रकाशन से जुड़ने के बाद उनके चिंतन का फलक और भी व्यापक व विस्तृत हो चुका था। अनुभव और ज्ञान की झलक उनकी दिनचर्या में स्पष्टतया: दृष्टिगोचर होती थी। प्रतिदिन जीवन की सांझ में व्याप्त होने वाले अंधेरे से वे किंचित नहीं घबराते थे बल्कि कल सुबह होगी जैसी आशा लिए जल्द उठकर भ्रमण पर निकल जाते थे।

प्रत्येक प्राणी विशेषकर मनुष्य के मस्तिष्क में विराजित मन काल्पनिक भाव स्पंदन से परिपूर्ण रहता है। मन का जीवन केंद्र मनुष्य का हृदयतल है। मन को काल्पनिक इंद्रिय भी कहा जाता है। मन की प्रवृत्ति है चिंतन और अनुभूति। श्री व्यास इस तथ्य को भली-भांति जानते थे। वे कहते थे कि जब मन आत्मिक आनंद के समुद्र में गहरे गोते लगाता है तो परम सुख की अनुभूति स्वमेव होने लगती है। मन जिस आनंदानुभूति का अवगाहन करता है वह मनुष्य के हृदय की आंतरिक गुहा में अवस्थित रहती है। वह जो कुछ अनुभव करता है वही जीवन की प्रेरक शक्ति होती है। आत्मिक आनंद के ये अनुभव आत्मा रूपी दर्पण अथवा आत्मिक धरातल पर अपने संस्कार छोड़ जाते हैं। इंद्रियजनित ये संस्कार मन में संचित हो जाते हैं तब उन्हें आसानी से नहीं हटाया जा सकता। उसी प्रकार वे संस्कार जो आत्मिक धरातल पर अनुभव किए जाते हैं। कभी भी नष्ट नहीं होते। भीड़ से हटकर एकाकी क्षणों में वे सदैव प्रेरणा देते रहते हैं। मुझसे यह संवाद श्री व्यास ने अपने देहावसान के ४८ घंटे पूर्व किया था। अतएव अब उनकी स्मृतियां ही शेष रह गई हैं जिन्हें मैंने धरोहर के रूप में सुरक्षित किया है।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

नाहक मत जोड़ भीड़ से अपना मन।
एकांत का फिर करना पड़ेगा जतन।।

मोहन भागवत का प्रवचन नियंत्रित लोकतंत्र विषयक फुसलाने वाली भाषा

दाऊ पटेल
(तालिब-भोपाली)

गत दिवस राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने मुंबई में आयोजित एक सभा में कहा कि जंतर-मंतर पर जेन जी द्वारा किए गए प्रदर्शन में कोई बुराई नहीं थी। उन्होंने संवाद की जरूरत पर बल दिया।

इस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जगदीश्वर चतुर्वेदी ने भागवत के प्रवचन को नियंत्रित लोकतंत्र विषयक फुसलाने वाली भाषा निरूपित किया।

कड़वा सच कहा आपने प्रिय चतुर्वेदी जी। अब ये बातें कोई बड़ा रहस्य नहीं, बल्कि जीती-जागती कठिन और भयावह सच्चाई है। संघ सड़ांध से भरी फूलदार किन्तु काँटों से भरी ज़हरीली झाड़ियों के पीछे बजबजाता हुआ गहरा दलदल है, किसके किनारे ख़तरनाक मगरमच्छ पलते हैं। जो कमज़ोर पड़ जाने पर फर्ज़ी आँसू बहाते फिरते दिखते हैं। लोगों! आँखें खोल कर ठीक से देखिए तो देखने पर दिखेगा- बिना जवाबदेही की प्रच्छन्न समानांतर सत्ता और बदमाशी, हेठी और हनक से अनधिकार सार्वजनिक संसाधनों को हड़पना और अपनों को बेशर्मी से लुटाना और अपना गिरोह बढ़ाते रहना इनका तय काम है।

थोड़ी-सी हरियाली, फूल पत्तों के पीछे से बगुलों, मेंढकों की लगातार उठती रहती आई आवाज़ों से घिरे दलदल को किनारे देश को छलने के लिए ही तो कागज़ी कमल की कुछ नक़ली और पोली डंडियाँ लाकर खुरस दी गई हैं। जेन जी से जुड़े किशोर-युवा सबसे पहले खुद इस में धंस जाने से बचें। अपने परिवार, समाज को इसके जानलेवा ढब से आगाह करें। इसके आधे देश भर में पसर चुके प्रसार की केवल रोकथाम ही न करके रूक जाएं। जो दलदल तुम्हारे आसपास मिले सहज आवागमन की सड़कों, राहों को लीलते हुए घरों की देहरी के बहुत करीब तक आ पहुंचा है।

देर तो बहुत ज़्यादा हो चुकी है फिर भी यह विकराल दलदल फैलते-फैलते हमारे उजड़ते घरों को पूरी तरह से अपनी अपनी ज़द में ले ले; जागें। अब कमर कस लें!

ध्यान रहे यहाँ भेड़िए बसते हैं संघ के इस छल-तंत्र के इर्द गिर्द। पूरी सजगता से, हिम्मत करके पीली पड़ती काँटेदार झाड़ियाँ साफ करें कि यह साफ़- साफ़ ज़ाहिरा दिखे। तब भेड़ियों की जूठन पर पलते रंगे सियारों के झुंड तुम्हें रह रह कर बरगलाऐंगे, जीवदया के लिजलिजी भावुकता भरी दुहाइयां भी देंगे, बहलाएंगे फुसलाएंगे; इनकी बातों में न आ जाना।

...और तब इस दलदल के किनारे पहले कुछ प्रतिरोधी मज़बूत पेड़ उगाएँ। खतरे को लगातार उजागर करें, इसमें बह कर जाने वाले बरसाती पानी के रेलों की दिशा बदलें और प्राण कर लें कि, सोने का कंकण दिखा कर जान ले-लेने वाले भेड़िए जिसके किनारे पलते हों; ऐसे दलदल को हमेशा के लिए भरती कर देना है, ज़मीन बराबर कर देना है। ...और यदि हम ऐसा करने में सफल हुए तो हमारी अगली पीढ़ियाँ इसे खेत बना कर देश की लगभग भिखारी हो चुकी जनता के लिए अन्न उपजाऐंगी।

-भोपाल

माथुर के महात्मा : प्रख्यात पत्रकार राजेंद्र माथुर की स्मृति में गांधी भवन न्यास,भोपाल का आयोजन

निर्दलीय संवाद

भोपाल। नई दुनिया और नवभारत टाइम्स के संपादक, शीर्षस्थ विचारक और लेखक राजेंद्र माथुर की ९१ वीं जयंती पर गांधी भवन न्यास द्वारा एक विशेष कार्यक्रम राजधानी भोपाल में आज संपन्न हुआ !

कार्यक्रम के अध्यक्ष पद्मश्री श्री विजय दत्त श्रीधर, मुख्य अतिथि दैनिक भास्कर पत्र के समूह संपादक श्री प्रकाश दुबे एवं मुख्य वक्ता प्रख्यात पत्रकार श्री प्रकाश हिन्दुस्तानी रहे !

विशिष्ट अतिथि के रूप में मध्यप्रदेश और देश की पत्रकारिता के अनेकों पुरोधाओं श्री चंद्र कांत नायडू , ओम प्रकाश मेहता , डॉ सुधीर सक्सेना , उमेश त्रिवेदी की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री प्रकाश हिन्दुस्तानी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि , माथुर जी ने पाठकों को लोकतांत्रिक तरीके से इंपावर्ड किया । उन्होंने नई दुनिया में पत्र संपादक के नाम में समस्याओं को रेखांकित करने वाले अनेकों विषयों को प्रकाशित कर पत्र लेखकों को लेखक बना दिया था । गांधी जी के चरखे की अंग्रेजी राज से स्वतंत्रता में भूमिका का उल्लेख करते हुए बताया कि चरखे से कपड़े के उत्पादन द्वारा भारत में ब्रिटिश कपड़ों के आयात को इतना घटा दिया कि ,ब्रिटेन की कपड़ा मिलें बंद हो गईं।

ब्रिटेन में गोलमेज सम्मेलन में गांधी जी ने खुल कर कहा कि चरखा हमारी जरूरत और अनिवार्यता है।

आज जब जी डी पी में वृद्धि और विकास की चर्चाएं होती हैं तब राजेंद्र माथुर स्मरण हो आते हैं जिन्होंने जमीन किसकी ? विस्थापन , आदिवासियों

की समस्याओं को प्रमुखता दे कर विकास की वास्तविकताओं पर बहस को प्रमुख विषय बनाने में उल्लेखनीय भूमिका अदा की थी। राजेंद्र माथुर जी का स्मरण राजनीति और अर्थ नीति में आम आदमी के स्थान , सत्ता से सवाल आदि विषयों को ले कर भी हो आता है।

श्री प्रकाश दुबे जी ने श्री माथुर के गांधीवादी विचारों का उल्लेख करते हुए रेखांकित किया कि उनकी सत्य के प्रति निष्ठा बेमिसाल थी . आज के समय में समाचारों की अविश्वसनीयता का उल्लेख करते हुए उन्होंने नई पीढ़ी के पत्रकारों से खबरों को सत्य पर आधारित होने का अनुरोध किया .

श्री विजय दत्त श्रीधर ने स्वर्गीय माथुर जी के पत्रकारिता के मिशन का विशेष उल्लेख किया जिसमें पाठकों को समाचारों और अखबारों से जोड़ते हुए समाज और देश की ज्वलंत समस्याओं के प्रति जागरूक बनाना प्रमुख था । लेकिन , श्री माथुर के बाद इस दिशा में ऐसे अखबार अनुपलब्ध हैं. अन्य विशिष्ट वक्ताओं के साथ ही श्री प्रताप भानु शर्मा और श्री राजेश सिरोदीया ने स्वर्गीय माथुर के साथ अपने संपर्कों , उनकी शिक्षाओं , निश्छल स्वभाव और प्रखर पत्रकारिता के संस्मरणों को साझा किया .

कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री राजेश बादल द्वारा श्री राजेंद्र माथुर की स्मृति में निर्मित दो वृत्त चित्रों का प्रदर्शन कर उनकी स्मृतियों को जीवंत कर दिया .

गांधी भवन न्यास की ओर से श्री राजेश बादल ने कार्यक्रम का संचालन किया और सचिव श्री अंकित मिश्रा ने आभार प्रदर्शन किया !

न्यास के मोहनिया हाल में बड़ी संख्या में प्रदेश के पत्रकारों और बुद्धिजीवियों की सहभागिता रही।

माता-पिता का सम्मान ही सच्चा संस्कार

समाज में समय-समय पर ऐसी घटनाएँ सामने आती हैं जो केवल एक परिवार की कहानी नहीं होतीं, बल्कि पूरे समाज के लिए आत्ममंथन का विषय बन जाती हैं। हाल ही में ऐसी एक खबर चर्चा में रही कि तीन बेटियों ने अपने पिता के अंतिम संस्कार में भाग नहीं लिया और इससे पहले अपनी माता के अंतिम संस्कार में भी उपस्थित नहीं हुईं। यदि यह घटना तथ्यात्मक रूप से सही है, तो यह केवल एक परिवार का दुःख नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक मूल्यों पर गंभीर प्रश्नचिह्न है।

विशाल श्रीवास्तव

माता-पिता केवल जन्म देने वाले नहीं होते, वे हमारे पहले शिक्षक, पहले मित्र और जीवन के सबसे बड़े संरक्षक होते हैं। वे अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी इच्छाओं, सुख-सुविधाओं और अनेक सपनों का त्याग कर देते हैं। जब संतान अपने पैरों पर खड़ी होती है, तब माता-पिता को बदले में केवल सम्मान, अपनापन और कुछ समय की अपेक्षा होती है। जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई यही है कि धन, पद और प्रतिष्ठा दोबारा मिल सकते हैं, लेकिन माता-पिता और बड़े-बुजुर्ग एक बार चले जाएँ तो फिर कभी वापस नहीं आते। उनके अंतिम समय में साथ होना केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि हमारे संस्कार, कर्तव्य और मानवता का परिचायक है।

आज आधुनिक जीवन की व्यस्तता, दूरियाँ और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ बढ़ रही हैं, लेकिन इन सबके बीच यदि हम अपने माता-पिता के प्रति संवेदनाएँ खो दें, तो हमारी सारी उपलब्धियाँ अधूरी हैं। किसी भी सभ्य समाज की पहचान उसकी तकनीकी प्रगति से नहीं, बल्कि अपने बुजुर्गों के प्रति उसके सम्मान से होती है।

यह घटना हम सभी के लिए एक संदेश है कि अपने माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों को केवल विशेष अवसरों पर नहीं, बल्कि उनके जीवन के हर पड़ाव पर सम्मान, प्रेम और समय दें। उनके साथ बिताया गया हर क्षण भविष्य में सबसे अनमोल स्मृति बन जाता है। आइए, हम संकल्प लें कि अपने माता-पिता का सम्मान करेंगे, उनकी सेवा करेंगे और अपने बच्चों को भी यही संस्कार देंगे। क्योंकि जिस घर में माता-पिता और बुजुर्गों का सम्मान होता है, वहाँ सुख, शांति और समृद्धि स्वयं अपना निवास बना लेती है। माता-पिता का सम्मान केवल हमारा कर्तव्य नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, हमारी पहचान और हमारे उज्ज्वल भविष्य की सबसे मजबूत नींव है।

-भोपाल

संपादक: प्रिंस अभिशेख अज्ञानी (९८२६४२२८२०)

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निष्पक्षता, निर्वैरता व निडरता का दैनिक प्रवक्ता

निर्दलीय

www.nirdaliya.com ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

वर्ष-५४/१६ | भोपाल, ९ अगस्त, डाक १० अगस्त २०२६ | मूल्य -1+1/-संप्रेषण /स्वैच्छिक

संस्थापक संपादक
-कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी'
(९४२४४४३४०१)

संपादक
-प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)
(९८२६४२२८२०)

सलाहकार/संरक्षक- सेठ रामनिवास गुप्ता, कविता मल्होत्रा (नई दिल्ली), मधुबाला पांडेय (भोपाल)

मुख्य संरक्षक
पवन कुमार जैन (बदनावर)

प्रबंध संपादक
अशोक निर्मल

साहित्य संपादक-
सरिता गर्ग 'सरि' (जयपुर)

स्वामी निर्दलीय प्रकाशन एवं स्वत्वाधिकारी कैलाश श्रीवास्तव के लिए संपादक प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)' (दृष्टि जन संगठन) द्वारा निर्दलीय प्रेस भोपाल द्वारा जेयन ऑफसेट के सहकार्य से मुद्रित तथा एफ-116/7 शिवाजी नगर,भोपाल -462016 से प्रकाशित

मोहन प्रकाश व्यास की असमय मौत का राज क्या है ? सच सामने आना जरूरी

प्रिंस अभिशेख अज्ञानी

भोपाल। प्रादेशिक राजधानी भोपाल में स्थित निजी क्षेत्र के चिकित्सालय अक्षय का नाम समूचे मध्यप्रदेश में है। हृदय रोग के उपचार में उसकी ख्याति बाहर भी है। माचना कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल निवासी वरिष्ठ समाज परिवर्तक मोहन प्रकाश (एमपी) व्यास वहां नियमित रूप से स्वास्थ्य परीक्षण कराते थे।

इसकी बिना पर भी तथा सतत सक्रिय व व्यस्त रहने और सादा-संतुलित-सीमित-पौष्टिक भोजन समयबद्ध रूप से लेने के आधार पर वे स्वयं को पूर्ण स्वस्थ घोषित करते रहते थे। ७६ वर्षायु में भी उनको कम उम्र में नौजवानों को विभिन्न स्तर पर मात या चुनौती देते देखा जा सकता था। हालांकि उन्हें मधुमेह व उच्च रक्तचाप की समस्या थी मगर अक्षय हार्ट अस्पताल में नियमित जांच एवं परीक्षण कराकर ली जाने वाली दवाई से भी श्री व्यास स्वयं को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखते थे। सतत पैदल चलना व दुपहिया-चौपहिया गाड़ी का आवश्यकतानुसार उपयोग उनके लिए आम था।

गत बुधवार पांच अगस्त को वे खुद ही दोपहिया गाड़ी चलाकर अक्षय अस्पताल नियमित जांच हेतु पहुंचे। उसके पहले तीन अगस्त को श्री व्यास नियमित जांच हेतु अक्षय अस्पताल पहुंचे थे, जहां उन्हें एक दिन बाद अर्थात पांच अगस्त को बुलाया गया था। उनके निकट सहयोगी व वरिष्ठ समाजसेवी राजकुमार शिवम (द्विवेदी) ने पांच अगस्त की शाम मुझे बताया कि स्मार्ट सिटी अस्पताल में उनका देहावसान हो गया है तो मैं सन्न रह गया। वहां पहुंचने पर उन्होंने अवगत कराया कि अक्षय अस्पताल में एक चिकित्सक ने श्री व्यास को कहा-आपके हृदय में कुछ दिक्कत है और अनुवांशिक ब्यौरा भी उनसे लिया तथा खुद उनको करीब सात किलोमीटर दूर निजी क्षेत्र के स्मार्ट सिटी अस्पताल लेकर वह चिकित्सक पहुंच गए। वहां उन्हें छल्ले/स्टेन डालने की जरूरत बताकर राशि जमा कराई गई। अस्पताल के चिकित्सकों ने बताया कि इसी बीच उनकी हृदय तरगें २०० जा पहुंची और यह सुनकर प्राणांत हो गया। श्री शिवम (द्विवेदी) के अनुसार उन्हें वे वेंटीलेटर पर ही मिले और संभवत: उनके प्राण पहले ही जा चुके थे।

यहां कुछ प्रश्न हैं जो अगले दिन सुभाष नगर शमशान घाट पर शोक सभा में मैंने अपने संबोधन में बेबाक ढंग से स्पष्ट रूप से उछाले-

१. अक्षय अस्पताल हृदय रोग उपचार हेतु प्रतिष्ठित व पुराना अस्पताल है तो श्री व्यास को सुदूर व नवोदित चिकित्सालय स्पष्ट रूप से क्यों ले जाया गया जो हृदय रोग हेतु जाना भी नहीं जाता?

२. अक्षय के पास कोलार मार्ग पर चूना भट्टी में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. पीसी मनोरिया का अस्पताल है तो स्मार्ट सिटी से पहले विधायक विश्राम गृह, जवाहर चौक में अनंतश्री अस्पताल हृदय रोग उपचारार्थ हैं। हृदय रोग के उपचार हेतु स्थापित अन्य अस्पताल भी हैं मगर उन्हें वहां क्यों नहीं ले जाया गया?

३. अक्षय अस्पताल में क्या श्री व्यास के उपचार हेतु पर्याप्त संसाधन, सुविधा, विशेषज्ञ चिकित्सक नहीं है?

४. क्या अक्षय अस्पताल मालिक व उच्च प्रबंधन के संज्ञान में लाए बिना यह सब हुआ ?

५. हमारी धरोहर श्री व्यास तो जा ही चुके हैं मगर अन्य के साथ ऐसी घटना ना हो, हमें कदम उठाना चाहिए और यहां (शोक सभा में) राजनीति व शासन-प्रशासन में पकड़ रखने तथा ब्रह्मलीन व्यासजी को मानने वाले तमाम लोग मौजूद हैं तो कुछ करना चाहिए।

ज्ञातव्य है कि मुझसे पहले वरिष्ठ पत्रकार जय श्रीवास्तव ने सांकेतिक रूप से श्री व्यास की मौत की तह में जाने की जरूरत निरूपित की थी मगर मैंने पूरा मामला एकदम स्पष्ट रूप से रखना आवश्यक समझा।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि श्री व्यास निर्दलीय समाचार पत्र समूह सह प्रकाशन के अनन्य सहयोगी, संरक्षक व सलाहकार थे और वे अपने पीछे दो दिवंगत भाइयों एवं एक दिवंगत बहन के अलावा दो अनुज (श्री राकेश व श्री संजय) तथा एक बहन निवेदिता व्यास का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उल्लेखनीय है कि प्रखर समाजसेवी, दानवीर और सर्वधर्म समभाव व सर्वजातीय समभाव की अलख जगाने वाले मोहन प्रकाश (एमपी) व्यास की पार्थिव देह को गत गुरुवार सुभाष नगर शमसान घाट में अग्नि के सुपुर्द किया गया। बुधवार की शाम उनका अकल्पनीय ढंग से देहावसान हो गया था। शमशान घाट पर हुई शोक सभा में श्री व्यास के निधन की स्थितियों की छानबीन करने और दोषी चिकित्सक व्यवस्था को खड़ा करने हेतु भी आवाज उठाई गई थी।

उक्त अवसर पर दिवंगत व्यासजी के अनुजद्वय राकेश व्यास (अधिवक्ता) व संजय व्यास (पत्रकार) के अलावा विपिन कुमार वर्मा (श्रीराम शिक्षण संस्थान), कैलाश आदमी (निर्दलीय प्रकाशन), अशोक त्रिपाठी (समय जगत), जय श्रीवास्तव (देश न्यूज चैनल), सुमित शर्मा (पंजाब केसरी), प्रिंस अभिशेख अज्ञानी (संपादक निर्दलीय), राजेंद्र श्रीवास्तव (नवभारत), देवेंद्र सिंह राजपूत (दाऊ पटेल), उदय सोनू (अर्जुन संग्राम), ओम प्रकाश अग्रवाल (पूर्व सहमहानिदेशक, दूरसंचार) एवं सूरज पाठक (देश न्यूज) के साथ राजनीति, शिक्षा, चिकित्सा, समाजसेवा, धर्म, शासन-प्रशासन, कला-संस्कृति-साहित्य तथा गीत-संगीत से जुड़े महानुभाव मुख्य रूप से सम्मिलित रहे। व्यासजी को मुखाग्नि दिए जाने के पश्चात आयोजित शोक सभा का संचालन अभा ब्राह्मण समाज के राज्य अध्यक्ष राजकुमार शिवम ने किया। अंतिम क्रियाकर्म पंडित सौरभ मिश्रा ने संपन्न कराए।

सैकड़ों की तादाद में उमड़े जन समूह में भोपाल विकास प्राधिकरण के पूर्व उपाध्यक्ष सुनील पांडे, गांधी भवन न्यास के सचिव अंकित मिश्रा, मप्र विधानसभा में पूर्व विधायक मंडल के कार्यालय प्रमुख मनोज चतुर्वेदी, डॉ. सुरेश गर्ग (वरिष्ठ संगीतज्ञ), अभा विश्वकर्मा विराट संघ के कार्य प्रमुख विजय कुमार विश्वकर्मा पांचालरत्न, जाने माने उद्यमी एवं निर्दलीय प्रकाशन के सहयोगी तथा पूर्व मंत्री उमा शंकर गुप्ता तथा पार्षद राजमणि उईके के प्रतिनिधि जीवन मारण, ख्यातनाम चिकित्सक डॉ. विनोद कुमार भारद्वाज, पं. अनिल भार्गव, महामंडलेश्वर मनीष शुक्ला, सर्व गढ़वाल महासभा के चंदूलाल खरे, संस्कार सेना के राजेंद्र बिरोले, धर्माचार्य पं. राजेंद्र शास्त्री, योगेंद्र कौशल, योगेंद्र कटारे, जमुनादास गोलानी, मेहबूब भाई, सरोज दत्ता, सौदान सिंह (विदिशा), जगदीश प्रसाद बुंदेली (अधिवक्ता), प्रदीप शर्मा, अनूप चौबे, राजू त्रिवेदी, रीतेश सालंकी (उज्जैन), सौरभ विश्वकर्मा (इंदौर), राजेंद्र मनावत, रूचि व्यास, रश्मि दुबे, शुभि व्यास, रमन यादव (मधुर म्यूजिकल समूह), राधेश्याम अग्रवाल (जन संवेदना), श्रीमती सरोज व्यास, राजू जाट, ज्ञानेश्वरी व्यास, जिला बार एसोसिएशन अध्यक्ष देवेंद्र रावत, सचिव मुकेश नागपुरे, अधिवक्ता साबित सिद्दीकी, प्रियनाथ अग्रवाल, राजेंद्र सिंह चौधरी, सुप्रतिष्ठित गायिका सोनम शर्मा, राजेश कुमार शर्मा (आर के क्रिएशन), अंकित परिहार आदि मुख्य रूप से शामिल थे।

संक्षिप्त जीवन परिचय

मोहन प्रकाश जी व्यास
जन्म- ८ फरवरी १९५१, जयपुर (राजस्थान)
माता/पिता- कौशल्या देवी/पुरुषोत्तम लाल
शिक्षा- विज्ञान स्नातक (सेफिया महाविद्यालय, भोपाल)
सेवाएं- जनगणना कार्यालय फिर विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार संचालनालय में सेवा के उपरांत पत्रकारिता।
वर्तमान निवास- १० माचना कॉलोनी, भोपाल

ब्रह्मलीन मोहन प्रकाश व्यास की अस्थियां बुदनी घाट पर नर्मदा नदी में विसर्जित

निर्दलीय संवाद

भोपाल/बुदनी (सीहोर)। समाज परिवर्तक मोहन प्रकाश व्यास की अस्थियां आज बुदनी (सीहोर) में मां नर्मदा नदी में प्रवाहित की गईं। उनके अनुजद्वय राकेश व्यास (अधिवक्ता) तथा संजय पीएल व्यास (पत्रकार) की नर्मदा घाट पर मौजूदगी में अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज के प्रदेशाध्यक्ष राजकुमार शिवम, निर्दलीय समाचार पत्र समूह सह प्रकाशन के संपादक प्रिंस अभिशेख अज्ञानी और वरिष्ठ युवा समाजसेवी उदय सोनू ने नर्मदा नदी में अस्थियां प्रवाहित कीं। उसके पहले सुभाष नगर शमशान घाट पर अस्थियां संचयन के अवसर पर विजय तिवारी, संजय सक्सेना (गायक) व श्री पाठक भी सहभागी हुए।

जे.के.स्टील फर्नीचर
भोपाल
जीवन मारण
स्वत्वाधिकारी संपर्क-9826422823

१. पेट्रोल पंप के सामने,चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग, २. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग, ३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल

ॐ
सहज योग केंद्र
वनभोज एवं पिकनिक निमंत्रण

सहज योग केंद्र के सभी योग साधकों को अत्यंत हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि, दिनांक **09-08-2026 (दिन रविवार)** को वनभोज एवं पिकनिक का आयोजन किया जा रहा है। अत: सभी से विनम्र आग्रह है कि योग केंद्र आकर पिकनिक पर जाने वाले सदस्यों की संख्या नोट करवा देवें, ताकि आने वाले समस्त सदस्यों के मनोरंजन एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

॥ कार्यक्रम विवरण ॥

शुल्क: ₹ 300/- प्रति साधक / सदस्य
समय: प्रात: 10:00 बजे से सायंकाल 05:00 बजे तक
स्थान: फार्म हाउस, रिलायंस पेट्रोल पंप के पास, एयरपोर्ट रोड, गांधी नगर, भोपाल

निवेदक
अशोक कुमार जैन (योगाचार्य)
8989110964